

शूकर पालन से बढ़ाएं आमदनी

विक्रमजीत सिंह, अशोक चौधरी, सुरेश चंद कांटवा और **गुलाब चौधरी**

"व्यावसायिक शूकर पालन वैश्विक कृषि क्षेत्र का एक आवश्यक स्तंभ है। यह दुनियाभर में सबसे अधिक खपत किए जाने वाले मांस यानी पोर्क की आपूर्ति करता है। चूंकि पशु प्रोटीन की मांग लगातार बढ़ रही है, इसलिए व्यावसायिक शूकर पालन में आर्थिक अवसर और चुनौतियां दोनों शामिल हैं। इस लेख में व्यावसायिक शूकर पालन की मूल जानकारी, इसके लाभ, चुनौतियां और भविष्य के रुझानों का विश्लेषण किया गया है। व्यावसायिक शूकर पालन मांस उत्पादन के उद्देश्य से शूकरों के बड़े पैमाने पर, व्यवस्थित उत्पादन को संदर्भित करता है। पारंपरिक या छोटे पैमाने पर शूकर पालन के विपरीत, व्यावसायिक संचालन में उच्च उत्पादन मात्रा, उन्नत तकनीकों का उपयोग और दक्षता पर जोर दिया जाता है। ये फार्म आमतौर पर मशीनीकृत होते हैं। उत्पादकता को अधिकतम करने और उपभोक्ता मांग को पूरा करने के लिए नियंत्रित वातावरण में शूकरों को पालने के लिए तैयार किया जाता है।"

पोर्क प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो किसान और देश दोनों के लिए शूकर पालन को एक आकर्षक व्यवसाय बनाता है। वैश्विक खाद्य श्रृंखला में इसका योगदान भी अत्यधिक है। इसमें चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी और स्पेन जैसे देश प्रमुख पोर्क उत्पादक के रूप में अग्रणी हैं।

कृषि विज्ञान केंद्र, हनुमानगढ़-II (नोहर), राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

व्यावसायिक शूकर पालन में मुख्य कदम

प्रजनन

किसी भी शूकर पालन कार्य में पहला कदम उच्च गुणवत्ता वाले प्रजनन स्टॉक का चयन करना है। यह प्रजनन फार्म की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वस्थ और आनुवंशिक रूप से श्रेष्ठ शूकर बेहतर संतान उत्पन्न करते हैं। किसान आमतौर पर विकास दर, रोग प्रतिरोधक क्षमता और मांस की गुणवत्ता जैसे कारकों के आधार पर शूकरों का चयन करते हैं। कृत्रिम गर्भाधान का उपयोग आमतौर पर व्यावसायिक शूकर पालन में किया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सर्वोत्तम आनुवंशिक लक्षण आगे बढ़ सकें।

गर्भधारण और प्रसव

एक बार जब मादा शूकर गर्भवती हो जाती है, तो वह लगभग 3 महीने, 3 सप्ताह और 3 दिनों (लगभग 114 दिनों) की गर्भधारण अवधि से गुजरती है। इस दौरान, स्वस्थ शूकरों के लिए उचित पोषण, देखभाल और तनावमुक्त वातावरण आवश्यक है। जन्म देने के बाद, मादा शूकर प्रसव के चरण में

प्रवेश करती हैं, जहां वे कई हफ्तों तक नवजातों को पालती हैं। व्यावसायिक संचालन में, शूकर और नवजातों की सुरक्षा और आराम सुनिश्चित करने के लिए अक्सर फरोइंग क्रेट का उपयोग किया जाता है।

पालन और फिनिशिंग

शावकों को उनकी माताओं से अलग करने के बाद (आमतौर पर लगभग 3-4 सप्ताह) उन्हें नर्सरी बार्न में ले जाया जाता है। यहां उनके स्वस्थ विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए आहार पर पाला जाता है। एक बार जब वे इष्टतम वजन तक पहुंच जाते हैं, तो उन्हें फिनिशिंग बार्न में स्थानांतरित कर दिया जाता है, जहां उन्हें वध के लिए तैयार होने तक रखा जाता है, आमतौर पर लगभग 6 महीने की उम्र में। इस स्तर पर स्वास्थ्य की निगरानी और अधिकतम विकास और मांस की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए संतुलित आहार प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

बाजार

जब शूकर बाजार के वजन (आमतौर पर 250-300 पाउंड के बीच) तक पहुंच जाते हैं, तो उन्हें प्रसंस्करण के लिए बूचड़खानों में भेज दिया जाता है। फिर मांस को काटा जाता है, पैक किया जाता है और विभिन्न बाजारों में वितरण के लिए तैयार किया जाता है। कई व्यावसायिक शूकर फार्म इस चरण को सुव्यवस्थित करने के लिए मांस प्रसंस्करण कंपनियों के साथ साझेदारी करते हैं।

व्यावसायिक शूकर पालन के लाभ

- **उच्च उत्पादकता:** व्यावसायिक शूकर फार्म दक्षता और उत्पादन के लिए तैयार किए जाते हैं। स्वचालित आहार प्रणाली, जलवायु नियंत्रण और स्वास्थ्य निगरानी उपकरणों जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग से, किसान कम समय में बड़ी संख्या में शूकरों को पाल सकते हैं। उत्पादकता का यह उच्च स्तर पोर्क की लगातार बढ़ती मांग को पूरा करने में सक्षम बनाता है।



- **आर्थिक प्रभाव:** पोर्क उत्पादन वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पालन से लेकर प्रसंस्करण तक लाखों रोजगार प्रदान करता है, और स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में योगदान करता है। कई देशों में, शूकर पालन एक प्रमुख उद्योग है जो ग्रामीण रोजगार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाला प्रमुख उद्योग है।
- **स्थिरता और संसाधन दक्षता:** व्यावसायिक शूकर पालन में अपशिष्ट को कम करने और स्थिरता को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी और अनुकूलित प्रथाओं का उपयोग किया जाता है। अपशिष्ट पुनर्चक्रण और नवीकरणीय ऊर्जा जैसी प्रणालियों के माध्यम से कई फार्म अपने पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने का प्रयास कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, आहार रूपांतरण अनुपात को अधिकतम करके कम संसाधनों में अधिक मांस का उत्पादन किया जा सकता है। इससे पर्यावरण और आर्थिक स्थिरता दोनों सुनिश्चित होती हैं।

चुनौतियां

व्यावसायिक शूकर पालन की संभावनाएं आशाजनक हैं, निम्न चुनौतियां भी मौजूद हैं:

- **रोग नियंत्रण:** शूकर कई तरह के रोगों के प्रति संवेदनशील होते हैं, जो फार्म में तेजी से फैल सकते हैं। अफ्रीकी स्वाइन फीवर (एएसएफ) जैसे प्रकोप वैश्विक पोर्क आपूर्ति को प्रभावित करते हैं। संगरोध प्रक्रियाओं, स्वच्छता प्रथाओं और टीकाकरण कार्यक्रमों सहित सख्त जैव सुरक्षा उपाय शूकरों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।
- **पर्यावरण संबंधी चिंताएं:** संधारणीय पालन में प्रगति के बावजूद, बड़े पैमाने पर शूकर पालन की अक्सर इसके पर्यावरणीय प्रभाव के लिए आलोचना की जाती है। यह अपशिष्ट प्रबंधन, जल उपयोग और कार्बन फुटप्रिंट जैसी समस्याएं उत्पन्न करता है। कई व्यावसायिक फार्म अधिक पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को अपनाकर इन मुद्दों को हल करने के लिए काम कर रहे हैं।
- **पशु कल्याण:** इस उद्योग के भीतर पशु कल्याण चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय है। आलोचकों का तर्क है कि व्यावसायिक शूकर पालन संचालन में सीमित स्थितियां, विशेष रूप से फरोइंग और फिनिशिंग बार्न में, पशुओं के तनाव



शावकों की विशेष देखभाल

और परेशानी का कारण बन सकती हैं। जवाब में, कई फार्म अधिक मानवीय प्रथाओं की ओर बढ़ रहे हैं। इसके अंतर्गत फार्म अधिक विशाल आवास और बेहतर देखभाल प्रोटोकॉल अपनाकर पशु कल्याण सुनिश्चित कर रहे हैं।

- **बाजार में उतार-चढ़ाव:** आहार आपूर्ति शृंखला व्यवधान और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीतियों के कारण पोर्क की कीमतें अस्थिर हो सकती हैं। किसानों को लाभदायक बने रहने के लिए इन उतार-चढ़ावों का मूल्यांकन करना आवश्यक है। अक्सर कीमतों को स्थिर करने के लिए प्रसंस्करण संयंत्रों या सहकारी समितियों के साथ अनुबंधों पर निर्भर रहना चाहिए।

व्यावसायिक शूकर पालन में उभरते रुझान

- **तकनीकी नवाचार:** उन्नत पालन से लेकर ब्लॉकचेन ट्रैकिंग तक, तकनीक शूकर पालन उद्योग में क्रांति ला रही है। आईओटी सेंसर शूकरों के स्वास्थ्य की निगरानी करते हैं। आहार एवं जल प्रबंधन प्रणाली को स्वचालित करते हैं। फार्म प्रबंधन को अनुकूलित करने के लिए उत्पादन डेटा को ट्रैक करते हैं। ये नवाचार किसानों को सूचित निर्णय लेने, दक्षता में सुधार करने और लागत कम करने में मदद करते हैं।
- **वैकल्पिक आहार और संधारणीय अभ्यास:** आहार उत्पादन के पर्यावरणीय



मादा एवं शावकों के आवास का उन्नत प्रबंधन

प्रभाव के बारे में बढ़ती चिंताओं के साथ, कीट आहार, शैवाल और खाद्य अपशिष्ट जैसे वैकल्पिक आहार स्रोतों की ओर रुझान बढ़ा है। ये विकल्प पारंपरिक आहार सामग्री पर निर्भरता को कम करने और शूकर पालन के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की क्षमता प्रदान करते हैं।

- **नैतिक प्रथाओं के प्रति उपभोक्ता मांग:** उपभोक्ता अपने आहार विकल्पों के लिए नैतिक प्रभावों के प्रति अधिक जागरुक रहे हैं। इस कारण मानवीय रूप से पालन किए गए और टिकाऊ स्रोतों से प्राप्त पोर्क उत्पादों की मांग बढ़ रही है। इसके परिणामस्वरूप उद्योग में पारदर्शिता बढ़ी है और कई फार्म उच्च कल्याण मानकों को पूरा करने के लिए ग्लोबल एनिमल पार्टनरशिप या एनिमल वेलफेयर अप्रूव्ड जैसे प्रमाणन संस्थानों से मान्यता प्राप्त कर रहे हैं।
- **आनुवंशिक उन्नति:** आनुवंशिकी शूकरों की उत्पादकता और स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आनुवंशिक अनुसंधान में प्रगति के साथ, किसान अब ऐसे शूकर पाल सकते हैं, जो अधिक रोग-प्रतिरोधी, तेजी से बढ़ने वाले और उच्च गुणवत्ता वाला मांस उत्पादित करते हैं। आनुवंशिक सुधारों में दक्षता बढ़ाने और एंटीबायोटिक दवाइयों और अन्य हस्तक्षेपों की आवश्यकता को कम करने की क्षमता है।

व्यावसायिक शूकर पालन एक गतिशील उद्योग है, जो वैश्विक खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पोर्क की बढ़ती मांग के साथ, किसान लगातार अपनी पालन-पोषण प्रथाओं में निरंतर सुधार कर रहे हैं, ताकि उत्पादन टिकाऊ, कुशल और नैतिक तरीके से सुनिश्चित किया जा सके। उद्योग को रोग के प्रकोप, पर्यावरणीय दबाव और बदलती उपभोक्ता वरीयताओं के विकास जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए नवाचार और अनुकूलन भविष्य में इसकी वृद्धि और सफलता को बनाए रखने के लिए आवश्यक होंगे। उन्नत तकनीक, नई प्रजनन विधियां और बेहतर पशु कल्याण प्रथाओं के माध्यम से, व्यावसायिक शूकर पालन का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है-बशर्ते लाभप्रदता और स्थिरता के बीच कायम रखा जाए। ■

भाकृअनुप की मासिक लोकप्रिय पत्रिका
'खेती' नवम्बर, 2025 विशेषांक के प्रमुख आकर्षण

- लवण-प्रभावित मृदा का डिजिटल मानचित्रण और मूल्यांकन
- अश्वगंधा की खेती के लिए अपशिष्ट ऊन तकनीक
- बाजरा की लवणता सहनशीलता का समाधान
- मृदा से समृद्ध भविष्य
- कट-सॉइलर तकनीक द्वारा सरसों-बाजरा की उपज में वृद्धि
- सरसों की खली के फायदें
- बारानी एवं लवणग्रस्त क्षेत्रों के लिए जलवायु-स्मार्ट पोषक फसल किनोवा
- खाद्य उत्पादन वृद्धि में सुधार विकल्पों की भूमिका
- उत्पादकता वृद्धि हेतु आर्बस्कुलर माइकोराइजा आधारित जैव पादप वृद्धि वर्धक
- सुधरी क्षारीय मृदा के लिये समेकित कृषि प्रणाली मॉडल
- लवणीय मृदा में चंदन की खेती
- प्राकृतिक वायुवीय पॉलीहाउस में लवणीय जल से सिंचित सब्जियों का टिकाऊ उत्पादन
- जलवायु चुनौतियों के खिलाफ फसलों को सशक्त बनाना
- बदलती जलवायु एवं अजैविक तनावों के अनुकूल खेती
- अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में लवणीय जलभराव वाले भू-दृश्यों के प्रबंधन

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in